तनाव पैदा करने वाली शिक्षा आत्महत्या का कारण

6 मई 2016, राजभवन, गाधोनगर।

कुछ दिन पहले समाचार पढ़ा कि कोटा (राजस्थान) के कलेक्टर ने छात्रो के माता-पिता और अभिभावको को पत्र लिखकर सलाह दी है कि वे अपनो बच्चो पर अपनी पसन्द न थोपे और उन्हें अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में निर्णय स्वय लेने दे। कोटा मे प्रतिवर्ष कई छात्र परीक्षा के दिनो में तनाव मे रहते हैं और आत्महत्या तक कर लेते हैं। परीक्षाजनित तनाव के कारण गुजरात में भी छात्रो द्वारा की जाने वाली आत्महत्या के समचार प्रायः सामने आते रहते है।

इस सम्बन्ध में निम्नलिखित सुझावो की ओर ध्यान देना उचित होगा:

- बच्चो को अपनी रूचि का विषय और पाठयक्रम चुनने दे। उनपर हम अपनी पसन्द न थोपे। बच्चो के सहजात रूझान का ध्यान रखें।
- बच्चो की रूचियो, क्षमताओ और योग्यताओ को ध्यान में रखे।
- गलत फ़ैसला हो जाए तो भी बच्चे को भरोसा

दिलाए। उसे नाहक न कोसे।

- उससे उसकी क्षमता से ज़्यादा की अपेक्षा न करे।
- बच्चो की दूसरो के साथ तुलना न करें।
- बच्चो को परिणाम के बारे मे न डराए।
- इजीनियरिग, मैडीकल, मैनेजमेंट जैसे पाठयक्रमो के अलावा और भी बहुत से पाठयक्रम है, जिनमे कैरियर के अवसर है। यदि बच्चे मे मैडीकल कोर्स जैसे कोर्सेज़ को उत्तीर्ण करने की क्षमता नही है तो उसे एसा पाठयक्रम चुनने के लिए बाध्य न करे।
- शिक्षा मे से भय का तत्व निकाल फेके और शिक्षा को रूचिकर और आनन्दमय बनाए।
- परीक्षा की मौजूदा पद्धति नकल की प्रवृत्ति को बढ़ावा देती है। परीक्षा पद्धति मे उचित सुधार करें ताकि बच्चा निर्भय होकर आत्मविश्वासपूर्वक परीक्षा दे सके।
- केवल सरकारी नौकरी ही एकमात्र कैरियर नही है। स्व-रोज़गार के अनेक क्षेत्र है। बच्चो को एसा शिक्षण-प्रशिक्षण दे कि वे स्वरोज़गार के लिए सक्षम बन सके।

- आवश्यकतानुसार बच्चो को परामर्श दे ; उनपर अपनी राय थोपें नही।
- बच्चो को पारिवारिक वातावरण मे घुलने–मिलने और समय बिताने के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- अकेलापन भी तनाव का कारण होता है। बच्चो से सवाद (Communication) बनाए रखे।
- अभिभावक अपनी तरूण सन्तानो से मित्रवत व्यवहार करे; उन्हे अनावश्यक रूप से कठोर अनुशासन मे न रखे।

सस्कृत का यह सुभाषित ध्यान मे रखे:

लालयेत पचवर्षाणि,
दशवर्षाणि ताड़येत्।
प्रोप्ते तु षोडशे वर्षे, पुत्र
मित्रवदाचरेत्।।

- बच्चो को सपने देखने दे। अपने सपने उनपर न थोपे।
- बच्चे चौबीसो घटे किताबो मे डूबे रहे और प्रकृति तथा पर्यावरण से कट जाए, यह ठीक नही होगा। किताबी कीड़ा न बने।

□□बच्चो को नन्हे हाथो से चाद सितारे छूने दो।
दो चार किताबे पढ़कर वरना हम जैसे हो जाएगे ।।□□

- शिक्षा और शिक्षण को सजीव, रोचक और सृजनात्मक बनाए जाने की ज़रूरत है। थका देनेवाली और उबाऊ शिक्षा को बदलने की ज़रूरत है।

अग्रेज़ो को उच्च शिक्षा के माध्यम के रूप मे जारी रखना उचित नही। इससे छात्रो पर दबाव पड़ता है। भारतीय भाषाओ के माध्यम से उच्च शिक्षा दी जानी चाहिए। अग्रेज़ो एक विषय के रूप मे पढ़ाई जाए।